

॥ आ० ॥ ३० ॥

①

॥ श्रीरामविजययंत्रचरित्यावाद्याय प्रारंभः ॥



श्री॥
११॥

②

श्रीगणेशायनमः॥ ज्योतिर्गणिककृष्णकुम्भपुष्पण॥ पद्मजातजनकपद्मलोचन॥ विषकंठहृदयसंकुच
दलन॥ सञ्जीवानंदतनुजो॥ १॥ ज्योतिर्विक्रमकमकदिवाकर॥ अजितभ्रान्तिविपिनवैश्वानर॥ ज्योति
कहृदयाब्जनिर्लज्जमर॥ लिखवतारिजो॥ २॥ ज्योतिर्गुणजैश्वर्यसंपन्न॥ यशस्वीकिर्तिविज्ञान॥ ज्यो
तिर्यवैराग्यपरिपूर्ण॥ सत्यज्ञानशाश्वतजो॥ ३॥ ज्योतिर्निर्विकल्मषनंत॥ ज्योतिर्बुद्ध्यांतविवर्जित॥
तोसुवेकचकिंरघुनाथ॥ शङ्खसवधार्यपातला॥ ४॥ ज्योतिर्भवगजविदारकभृगनायक॥ ज्योतिर्माध्यम
काचापरियाक॥ लोराभताटिकांतक॥ सुरपाककेजगद्गुप्त॥ ५॥ गलकथाध्याईनिरोपण॥ गु
णसिंधुचाचंधुलक्ष्मण॥ ईदजितचाचकरन॥ निरधुनपैआला॥ ६॥ शिराचेप्रातर्बिबि
चित्रा॥ तपसंसुवेकशिवाणिलेशिर॥ लकेवरपडिलेककिवर॥ भुजपडिलिस्वसदनि॥ ७॥
भुजनापडुनउत्त॥ जैसाकंदुकुत्सकोनअकस्मात्॥ तैरिभुजजाउनतरित॥ निकुंवेकवरि
पडियेलि॥ ८॥ सुलोचनेचेजांगणि॥ भुजदंडवलपडेतेक्षणि॥ तोंरावणभुषाअंतरसदनि॥

(सुखरूपकैसलसे ॥ ९॥ तोंदशशतवदनाचिकुमरि ॥ किंनवप्यसागरिंचिलहुरि ॥ जेष्टनुषानि
 धरिं ॥ राधववरिचिह्नयेपै ॥ १० ॥ जेनगरिशत्रुचिगणि ॥ जेयामिनिचरंविस्वामिणि ॥ जिवेंस्व
 चपलावप्यदेखेनि ॥ सुरंगनालड्जीत ॥ ११ ॥ देवांगनागंधर्वराजकुमरि ॥ शेवाकरितिबहुरा
 नि ॥ सहस्रनेत्राचिजंतुरि ॥ नपवसरिईयचि ॥ १२ ॥ अगिचासुवासजहुत ॥ धावतयेकक्रोडापुरि
 यंत ॥ विशक्ठरिपुचिकांतायथार्थ ॥ तुकितांनपुंदयशि ॥ १३ ॥ नैपधजायापरमसुंदर ॥ वणिंतिका
 व्येकरितिचतुर ॥ परिशेषकन्येसिसाचार ॥ उपाधावयानपुरेचि ॥ १४ ॥ अगिचेप्रभेनेमुषणे ॥
 झळकतिबस्यतदिव्यरत्ने ॥ किंनरकन्यागायन ॥ मधुरस्वरेंजवककरिति ॥ १५ ॥ यकिभ्रगास्सा
 वरिति ॥ यकिचामरेंधेउनिवारिति ॥ यकिपदार्थआणुनदेति ॥ संतोषवितिनानाशब्द ॥ १६ ॥
 सुनोचनेचेग्रहिजानंद ॥ तोंजमृतांतपडेविषबिंद ॥ तैसातोभुजदंडसुवध्द ॥ आंगणियेननप
 डियला ॥ १७ ॥ भुजपडतांचिधरणि ॥ दणत्कारलितेक्षणि ॥ दुतिकातेधावेनि ॥ बाहुरजालापाहावया ॥ १८ ॥

॥ श्रीराम ॥

॥ २१ ॥

(3)

तों पाचु बंद बांगणात ॥ विरपाणि पडला बडुत ॥ हेरवे निदाशि मया मिता ॥ जल्मा संकेत सांगव
या ॥ १९ ॥ झपति नवल वर्तलें जि साजणि ॥ यकामा रुविरचातुटे निपाणि ॥ यउ नपीडि सास बांगणि ॥
निराक मार्गें बकु समाता ॥ २० ॥ जैके निदाशि चेक्कन ॥ डचकले सुलोचेने चेमन ॥ रत्न पादुकास
उकसत ॥ बाध्रयुगुळिले ईति ॥ २१ ॥ तडि हाय सळ के वंवर ॥ बांगणात पातलिसतर ॥ उतरला
तेका मुखचंद्र ॥ विकळनेत्र जाहले ॥ २२ ॥ आजात से विकळ ॥ पुढें नद्यात वेपाउत ॥ वदनि चें
काडुन तांबुल ॥ यकिके डेटाकिल ॥ २३ ॥ सभवेया सभणे सुलोचना ॥ आज प्राणपति गेलारणांग ॥ विजय ॥
णा ॥ शिने कारणे बयो ध्यासाणा ॥ सुवेका चडि याले ॥ २४ ॥ जैसें बोललां शेष नंदिनि ॥ भुजेस ॥ २५ ॥
मिपयात लिपकले वनि ॥ तव तो वक्रिस्वापाणि ॥ पतिव्रतेने वाळखिला ॥ २६ ॥ पांचांगुळि मुद्रि
कामेंडिता ॥ वरकंकण दिव्य विराजत ॥ दंडि किर्ति मुख सळकत ॥ चपळ हुन विशेष ॥ २७ ॥ आजि
माझे जाहाज बुडले ॥ झणे न होतें वदन पिटले ॥ परम बाकांत जाला तेव्हे ॥ तो वर्षिला नवज्मया ॥ २८ ॥

(3A)

सुमनककिंकेवरिसौदामिनि॥ पडलां उरिबउरे तयस्सणि॥ तैशिनिसजहेउनि॥ भोगेद्रनंदिनिपीड
 यलि॥ २०॥ तैमियाचिंगेलेधन॥ जळचरडैसंजिवनावांचुन॥ तैशिपतिवियोगंकनन॥ सुलेच
 नातकमकि॥ २१॥ ह्रणेविपरितकाकिंविगति॥ मगजकिंबुडालागमस्ति॥ दियतेजंरोहिणप
 ति॥ आहाकेनस्वालेपीडयला॥ २२॥ तयकुपिंपडलातरणि॥ पाडसंशिकधरिनावनि॥ पिःपलि
 केनेमुरिवंधालेनि॥ मेरकैसारगडिल॥ २३॥ अकिंकेनेगिकिलासुपणे॥ मर्यकेग्राशिलाभाहाव
 न॥ सुतानिकाळधतन॥ समरंगणिकेविमालि॥ २४॥ सुलेचनेशिउचलेनि॥ सरव्याविसवि
 लिसावनेनि॥ तोशोकनमायगर्गने॥ अकिंदतदियस्वर॥ २५॥ मगभुजेप्रतिबोलवचन॥ कैस
 प्राणपलिसबालेमरण॥ तैसर्ववर्तमान॥ लेहुनमजविदितकरि॥ २६॥ पतिवरणिमाझेमन॥ ज
 रिबसलनारिदिन॥ तरिपत्रलेहुन॥ वर्तमानभुतकरि॥ २७॥ हाटकपत्रपुढेंगेविले॥ भुजेनेप
 त्रउकलिले॥ लेखणिहातेदेताशिघ्रकाळे॥ मस्तकिंवरिलेतैकाकिं॥ २८॥ नवलबहुतवर्तले॥

॥ श्रीराम ॥
॥ ३५ ॥

(५)

वर्तमानपत्रिलिहिते ॥ सुलोचनेनेपत्रघेतले ॥ मस्तकिं वंदिते ते काकिं ॥ ३७ ॥ तथेनिलोरलेनश्रुपा
त ॥ शेषकन्यातेपत्रवाचित ॥ श्रोवत्याललनासमस्त ॥ बैकुंठिनिवांततेकाकिं ॥ ३८ ॥ जैकेंदूशश
तवदनकन्यके ॥ सकुमारचंपककठिके ॥ मममानससरावरमराकिके ॥ प्राणवक्त्रमेसुलाच
ने ॥ ३९ ॥ जयबाशाबलिधतन ॥ गुढस्फुटिकेसिंहवृत्त ॥ अग्नितुनदिव्यस्यदन ॥ निधातापु
ष्पराजस्य ॥ ४० ॥ फळप्राप्तिचासमयलक्षुन ॥ शत्रुबालेक्षयेध्यावेन ॥ चंडशिकावरिघालुन ॥
आराध्यदेवतक्षेत्रविले ॥ ४१ ॥ पर्वतचढलसंबुद्ध ॥ शिखरावरनदिव्यलेंढकलुन ॥ नदिभव ॥ विजय ॥
धिउत्तरोन ॥ तिरासमिपबुडाला ॥ ४२ ॥ अघटतवेराग्यदिव्यज्ञान ॥ वरिविषयघालापडेयउन ॥ ४३ ॥
किंजैसंप्राप्तहोतांनिधान ॥ विवशियेउननिय ॥ ४४ ॥ कष्टेकेलेवेदाध्ययन ॥ तोवरधाडघालि
जमिमान ॥ सूर्यसर्वबंवरक्रमुन ॥ राहुमुखिंसांपडेजैसा ॥ ४५ ॥ वक्त्रमेलेसेचयेथेजाले ॥ श
त्रुनिपुर्णशेवटिसाधियेले ॥ ब्राह्मवक्त्रउणेपडले ॥ होणारनचुकेकलांति ॥ ४६ ॥ पुढेंदातणसंग्रामपीडला ॥

(4A)

परिजयबाह्यासपाररवाजात्वा॥जाउनसौमित्रा०समिकाला॥शत्रुचवाडलापराक्रमा॥४६॥सौ
 मित्रपरमनिष्ठाडविरा॥त्याचिधनुर्विद्यादेखोनबपारा॥त्याशिम्याउचितदेउनसिरा॥राघवसौ
 मित्रजेडिला॥४७॥देहबाशाबहुचरना॥भयेशरणगतविमिषण॥म्यादेहत्रयनिरसुन॥वि
 देहजामातसुतकला॥४८॥सौमित्रतपस्विवित्रा॥बहुवदिवसनिराहार॥उतरोनियांसमुद्रा॥मा
 गावयाशिरयातला॥४९॥मगम्यारुपयातयाकुन॥निजशिराचेकैलदान॥तेणेरामचरणिनेउ
 न॥शिरमाईसमर्पिले॥५०॥शिरपाहानंविपयपि॥धडुमंआहरणि॥नुजमुकधडिलापणि॥
 वेगिकरोनयेईबातां॥५१॥मायानदिलंधुनहुचन॥पाहपैलतिरिवाट॥प्राणवक्लभेयउनमेरा॥
 स्तवस्वातांमजलागि॥५२॥दुःखतपपरमससार॥रामचरणिसुखवपारा॥हेजाणेनिधाडितकि
 रा॥येईसत्वरप्राणप्रिया॥५३॥असोधराधरकुमारि॥पत्रवाचुनलजवसरि॥शरिरटाकुनधरत्रि॥
 शोककरिबपारा॥५४॥अजिबकाचासमुद्रआटला॥किंघैयाचामेसरवचता॥प्रतापहसउन्म

॥ श्रीरामा ॥
॥ ५४ ॥

ॐ

॥ ५४ ॥ समरमुमिशिखकस्मात् ॥ ५५ ॥ ईद्रजितसूर्याचिर्येद्विषि ॥ मावळतिशत्रुनारांगणि ॥ तोबाजि
सौमित्रबाणराहुवदनि ॥ खग्रासकेलासमुक्ति ॥ ५६ ॥ रणसरोवरिशत्रुकमेवं ॥ तुवांरणनिबदुनिनि
जबेवं ॥ सौमित्रहतेजागेवं ॥ विदगेननेलेखिरमुक्त ॥ ५७ ॥ अशर्वतिसमानपाकशासन ॥ समरिप
उल्लाउलथान ॥ तोबाजिमज्जवलह्युमण ॥ तेणरणिमरिलवि ॥ ५८ ॥ मासेसौभाग्यभ्रांउर ॥ सौमि
त्रत्यावरिपउल्लातस्कर ॥ माश्यामाग्याचासमुद्रासौमित्रजगत्तिनेप्राशिल ॥ ५९ ॥ ईद्रजितमाशा
रोहिणिवर ॥ सौमित्रप्रतापिकुहुयो ॥ कडासहितनदिसम्बद्र ॥ पुष्कामायुतिसहसहि ॥ ६० ॥
हत्ररिशत्रुचिबंतुरि ॥ नानाप्रकारेविलापकरि ॥ पक्षिगजतेजवसरि ॥ रहनिकसणाजेको ॥ ६१ ॥
निरि ॥ ६२ ॥ सरिवयाह्यतिमुलोचने ॥ किमयव्यथोक्तकरणे ॥ आपलेपरत्रसाधनदेखणे ॥ सं
सारमायात्यजुनियां ॥ ६३ ॥ जेजेदिसेतंनाशवंत ॥ मुक्तिचमिध्याकुडलवत ॥ पदिनेपुंरंवाधोन
नाचत ॥ मिनमुमिसमिध्यापै ॥ ६४ ॥ उदमासगेलावध्यासुत ॥ रात्रिगजकिचेमछधरित ॥

॥ विजय ॥
॥ ६४ ॥

गंधर्वनगरिं चालोकां सनाटित ॥ मिथ्यासमस्तैस्ते संहे ॥ ६४ ॥ असौ नगरिशत्रुचिबंगन ॥ प्रवेशो
 नपाहे आसमदनि ॥ नानासंपदादेखो निनयनि ॥ मंजुविलेताकाठ ॥ ६५ ॥ परापवादिं वीरति
 सज्जन ॥ किंचिच्छिये देखतां वमन ॥ किंसुंदरलन देखो न ॥ विटे जैस विरक्त ॥ ६६ ॥ तैरिना
 नासंपदा देखतां ॥ विटलि शक्रिचिंता ॥ शुक्रस्थिति विजासमस्तां ॥ लुक्केले स्वहस्ते ॥ ६७ ॥
 सद्नासिन मनकसन ॥ शिविकेतन तरह सुधातुन ॥ पपठ अश्विणि वरिबैसो न ॥ लंके शिले
 काचालिलि ॥ ६८ ॥ अस्तागेला वासरमणि ॥ प्रवर्तलि तेकांधोर रजनि ॥ रजनि चरते क्षणि ॥
 नगरदुर्गिचे गजवजिते ॥ ६९ ॥ तो पण्डित यजुन ॥ पांगलिसंक्रुत वर्तमान ॥ मगदुर्ग कपाटे उतंघु
 न ॥ सुलोचना आंत संचरे ॥ ७० ॥ समेशिवैसलां लंके नाथ ॥ तो श्रुपादेरि विलंब कस्मात् ॥ गजव
 जिलामय जाकांत ॥ चिह्न विपरित देखो नि ॥ ७१ ॥ सुलोचना सद्देहा उनि ॥ मस्तक ठे विश्वशुस्व
 रणि ॥ शवण ह्मणे वोसा जणि ॥ माये किमर्थ आलिस ॥ ७२ ॥ भुजे सह वर्तमान पत्र ॥ श्वशुरा पु

॥ श्रीरामा ॥

॥ ५५ ॥

⑥

दंठे विसूत्रा ॥ हृणोस्वर्गपंचंगेला मत्तार ॥ त्यासमागमजाईनीमा ॥ ७३ ॥ बैसै बैकतांचिरावण ॥ चे
तवक्षस्थकवडउना ॥ स्वातेपडशिंगासनाहुना ॥ माहाद्रुमउन्मकेजेवि ॥ ७४ ॥ मृत्तिकाचेउनलंक
नाथ ॥ दाहिमुरिवंतेकांधातिना ॥ वर्तलायकचिआकांत ॥ नाहिअंतमाहाशब्दा ॥ ७५ ॥ गजर
बैकोनितेवळि ॥ मयजातेथेपावलि ॥ इद्रजिताचिवाताबैकिलि ॥ मुछितपडधरीणये ॥ ७६ ॥
बैशिसहस्रनिजांगना ॥ आलियामंडपस्थाना ॥ शोकापविंपडलिमयकन्या ॥ सर्वहितिससांव ॥ विजय ॥
रिति ॥ ७७ ॥ मंदोदरिहृणोस्नेहाका ॥ मेघनादानाश्रयावाका ॥ मजनपुसतारणमंडका ॥ सरविषाकैसा ॥ ५ ॥
गेलशि ॥ ७८ ॥ त्रिभुवनशोधिलांसमस्ती ॥ या ॥ नंदवसुजबैसाधनुधर ॥ बहिंघातलसुखर ॥ शत्रुस
मयखिकिलेशिरि ॥ ७९ ॥ पुर्वमिहृतनपजाचरका ॥ पुणनकरितांमध्येसोडिले ॥ हृणोनतुजबैस
निधानगेल ॥ आउठाकेलपुर्वकर्म ॥ ८० ॥ किंदेलाभ्यापंक्तिभेद ॥ किंसंतिवेलिलेयदेपशब्द ॥ किं
शिवआणिमुकुंद ॥ वेगळेदोघेभाविले ॥ ८१ ॥ हरिकीर्तनरंगमोडिला ॥ सुधार्यपात्रावतनिउठविला ॥

॥ श्रीराम ॥

॥ ६५ ॥

(७)

जेवराचराचें जिवन ॥ जनकजावेगळिकतन ॥ सकळस्त्रियां मातेसमान ॥ यकवाणयकवचनि ॥ १०॥
दुःखामाजिसुरवधोर ॥ द्विष्टिपाहेविदेहिवर ॥ तितेकननुज्ञासार्थकसंसार ॥ ईहिंपरत्रसर्वहि ॥ ११॥
जैसेबोलतां मयकन्या ॥ जालेंसुलोचनेच्यामना ॥ मगश्वशुराशिह्मणेधाजिजाजा ॥ सुवेकाचका
शिजावया ॥ १३॥ मगदशकवयनेत्रबोले ॥ तुजजरितेहिदेउनघेतले ॥ तरिमगकैसेकरावेंतेवेढे ॥
सांगवीहितेंबात्तातें ॥ १४॥ मगवैसलाधुराचरित ॥ त्याचैमुखिकेविद्यालिजेहस्त ॥ यावरिशेष
कन्याबोलत ॥ दृडाकंठाशिबेकातें ॥ १५॥ परचातिबळभिलाषथरिबमंगळ ॥ असाकोणपुष्टिव ॥ विजय ॥
रिचांटाळ ॥ त्याचावंशमस्महेईल ॥ विपरितक्रमेचाचरतां ॥ १६॥ पतिहतेचाबभिलाषथसन ॥ ॥ ६॥
कोणपावलाडायकन्या ॥ रावणबोलेबधावदना ॥ तसित्वरजाईजे ॥ १७॥ तुजजरिविपरितक
रितांजाण ॥ शत्रुबवधेभस्मकरिना ॥ शेषतनयानिकेंद्रुणोन ॥ ताकाळविनिधालि ॥ १८॥ ब्रह्मस्य
तिजैसेविचक्षण ॥ घेतलेत्रेहवेंदिजन ॥ सहस्रार्धराशिघेउन ॥ भस्विनिवरिबासडेननिधालि ॥ १९॥

संसारमायाटाकुन ॥ संतस्वपिंहे तिलिन ॥ तैशिलंकानगर उपेक्षुन ॥ चालिलिशरणरामचंद्रा ॥ १० ॥
 परमवेगंते वेळिं ॥ जालि श्रीरामसमेजवळि ॥ उपाहृष्टिसमेटावयापातलि ॥ पुण्यगंगासुलोचना ॥ ११ ॥
 किंसेतविथेग्रहाप्रति ॥ विश्रुतियजैशिश्रंति ॥ तैशिशेषकव्याजातियति ॥ शितापतिलक्षुनि ॥ १२ ॥
 नकाद्रिमेवतेपर्वततस्वर ॥ तैसेराधवाविहितवावर ॥ कोटिहिपकलावधसुंदर ॥ जवनिजावरदेखि
 ता ॥ १३ ॥ मेवतेकपियंत्राकार ॥ उमेजसतिडोडुवकर ॥ मध्यंरघुनाथपिठपवित्र ॥ विराजमानधवध
 वि ॥ १४ ॥ जस्विणस्वातेउतरोनिजाणा ॥ मनिजाठवेकैलासराणा ॥ हंसगतिचमेकसुलोचना ॥ १५ ॥
 पकंन्याचलुरजे ॥ १६ ॥ यकथावोनिवावरयाति ॥ हंसपंथीरामशिसांगति ॥ किरावणेंपाठविलिशिता
 सति ॥ मयाभितहोउनिया ॥ १७ ॥ मगवोकेच्यापयाणि ॥ रावणजोंपडिलानहिरणि ॥ तोंद्रोष्टीन
 पडेजनकनंदिनि ॥ कदाकाळिलुमच्या ॥ १८ ॥ शेषकव्याजवळदेखोन ॥ विभिषणाकडेपाहेरघु
 नंदन ॥ तोंतेणेंमश्रुविभरलेनयन ॥ सहृदवंठजाहाला ॥ १९ ॥ हेजगजिक्नाराजिनेत्रा ॥ हेशक्र

॥ श्रीराम ॥
॥ ७ ॥

(8)

जितविभंगनापरमपवित्रा ॥ ईचेंनामयेतेंविशक्रंठमित्रा ॥ सर्वहिदोषहरतिल ॥ १॥ कर्मगतिपरम
गहन ॥ जिचेजंगुष्टिनपडरविकिण ॥ शेषकन्यासकुमारपुर्ण ॥ जालिधोवनशिरालागि ॥ १० ॥ तोंसु
लोचनाजवकियेउन ॥ विलेकुनिराधवध्याना ॥ नयजयकोरेत्यंगण ॥ राधवचरणिधातले ॥ ११ ॥
श्रीरामचरणकमळावरि ॥ शेषकन्याजालिफमरि ॥ ज्याचरणरजेंनिर्धारि ॥ पद्मजातनेयेउध्यरिलि ॥ १२ ॥
हरिद्रियासांपडेधन ॥ किंजल्पाध्यासजालिनयन ॥ किंनरदेवोक्तनदेरेवान ॥ मयुरजैसाजानंदे ॥ १३ ॥
किंपुरिबाहालजातसे ॥ त्यासप्राणसरवाल ॥ किंनिहतिदेडें ॥ निजमनजिकुनिया ॥ १४ ॥
किंदेखोनिश्रीरामचद्र ॥ उल्हासेसुलोचनाचकारा ॥ किंदोतमहादिनकर ॥ कर्मठिणिसाचारशेष ॥ विजया ॥
कन्या ॥ १५ ॥ संसारतापेंतापोनि ॥ द्रढजडलिश्रीरामचरणि ॥ तेथुनउठवयाशिमनि ॥ नाकसय ॥ ७ ॥
तसुलोचने ॥ १६ ॥ आतांहेमुखसांडुनि ॥ पुढलिकायपाहेंनयनि ॥ सुलोचनामस्तकहणोनि ॥
पायांवतनउचलिना ॥ १७ ॥ जैसासुधारसबिंदु ॥ तैसावैतिलालिनबंधु ॥ जोजगदचलयसिंधु ॥

लावितो वेधनिनेत्रा ॥ १८ ॥ ह्यणे मानि उठ झड करि ॥ परम अमलिस संसारि ॥ आलां सुख सपर हो पत्ति ॥
 जे हई सुख मे गित ॥ १९ ॥ जैसें जैके निझड करि ॥ उमीठ कलिदाष कुमरि ॥ पाणि द्वय जो हुन तेज
 वसरि ॥ स्तविन करि सज्ञा वै ॥ २० ॥ ह्यणे जय जय राम विश केश मित्रा ॥ हेरघोत मारा जिवनेत्रा ॥ हेज
 कदवणा चासगात्रा ॥ मित्र कुक मुगुद मणि ॥ २१ ॥ जगदंबा जगन्नायका ॥ जनक जापति जगत्स
 का ॥ जय मरण मय मोचका ॥ जनक जामाया डारु ॥ २२ ॥ जमदाग्न जित जकदन यना ॥ जगदि
 श्वरा जकदवणा ॥ जग व्यापका परदुःख हारणा ॥ जमजरारहित तुं ॥ २३ ॥ पुराण पुस्तकार धुनंदना ॥
 भक्त वृक्ष जगन्मोहना ॥ माया चक्र चक्रा निरंजना ॥ निष्कंका निरोपाधिका ॥ २४ ॥ आनं
 दनायोध्या पुरविहारा ॥ वेद वंद्या वेद सारा ॥ मखपाक कान्हिलो धारा ॥ परम उदारारधुरा
 या ॥ २५ ॥ जय जय राम विश्वपाकणा ॥ विश्व व्यापका विश्वरक्षणा ॥ विश्वमतिचाकका वि
 श्वजिनना ॥ विश्वरक्षका विश्वेश ॥ २६ ॥ विबुध ललाट पटल रवना ॥ सनक सनंदन मन

॥ श्रीराम ॥

(१)

रंजना ॥ हेरधुविरदानवकिंदना ॥ भवभंजनाभवहृदया ॥ २७ ॥ मंगकसपामंगककारका ॥ जयमं
गकजननिउधारका ॥ मंगकभगिनिप्राणनायका ॥ मंगकरिहितामंगकधामा ॥ २८ ॥ कमकद्रव
जनकाकमकनयना ॥ कमकनायकाकमकशयना ॥ कमकनाभाकमकवदना ॥ कमकसदना
कमकप्रिया ॥ २९ ॥ नमोभववारणपंचावना ॥ नमोपापारण्यकुठारतिहृणा ॥ हेत्रिविद्यताप
दहकशमना ॥ अनंतरायनाजनंता ॥ ३० ॥ लुडसववयाचापपणि ॥ नचलसहस्रवदनाचि ॥ विजय ॥
वाणि ॥ नेतिबलिहोनि ॥ आत्मायज्यं ॥ ३१ ॥ तथेयैकजिकेचेस्त्वना ॥ मांडेलमासेको ॥ ३२ ॥
दुना ॥ किंजैसंभगिरथिसमार्जना ॥ धिकुरेदेवविधडा ॥ ३३ ॥ पितकिचिपुष्पेनेउना ॥ केलेक
नकाद्रिचंपुजना ॥ किंजकार्णवासअद्यदाना ॥ कुपेदिनकसपाहे ॥ ३४ ॥ अर्कासवाहिलेनकि
सुमना ॥ मकयानकाशिनाचकप्रावर्णा ॥ हिराब्धिपुढेनेउना ॥ तक्रुजैसंसमर्पिले ॥ ३५ ॥ के
विंकरवेधरेवेवजना ॥ स्तमंकेचंचलाववागगना ॥ सससमुद्रिचंजिवना ॥ निरिविसंविमोजवे ॥ ३६ ॥

सकृच्छत्रकाशकनिशाकर॥त्यशिदशिवहिलिबणुमात्रा॥त्रिंशतुरपुष्पेउमावर॥हरिद्वियनेपु
 जिला॥३६॥तुझेदेखतांचिचरण॥तुटेदशत्रयबंधन॥मनहुउनिठविबेउन्मन॥जन्ममरण
 तुटले॥३७॥द्योगरिबाणिरांजणी॥येकबिंबलावासरमणि॥तैसेस्त्रिपुलफनमिधानि॥आपस
 णिव्यापकतुं॥३८॥तरिस्त्रिदेहचिबाभूति॥शक्ररिचिजंगणहणति॥पतिशिरासमवेतरघुपति॥
 अग्निमाजिघालिजे॥३९॥तुंजयोध्याधिगजनिउदार॥अनाथथाचकमिमागेरिर॥मिच्या
 लकतुंजकधर॥छपानिरवर्षकां॥४०॥जेकांउदयपावेगमस्ति॥तेकांचक्रवाक्रेमिकति॥तै
 सेआह्मास्पकरिरघुपति॥मित्रकुच्छत्रकाशका॥४१॥सिरबाणिजक॥वेगकनिवडिमराक॥तै
 सारामतुंतमालनिक॥भवपुरिहुनकडिकां॥४२॥पतिहातपाहतांपुर्ण॥तेकांचगेलेंपंचप्राण
 ॥परिशिराचेनिमित्तकतन॥तुझेचरणपांढांजान्ये॥४३॥तुंचितपरिस्त्रिपुलविश्र॥जाणशिस
 नांचेमनागत॥अस्यसुलोचनाबालत॥तटस्तजगंनयकजाते॥४४॥हणधन्यधन्यसहस्रनयन॥

॥ श्रीराम ॥
॥ ११ ॥

नैसंजन्मलें हृदय ईरल ॥ किंमोगें द्राचेल पपुर्ण ॥ कन्यासपप्रधटलें ॥ ४५ ॥ सुनेचेनेचें व्यातुर्व
देखोन ॥ कपिसककतुकवितिमान ॥ रामासहृणेमित्रबंदन ॥ ईसशिरदुनबेळवावें ॥ ४६ ॥
जांबुवंतहृणें हृपुष्यसरिता ॥ अंगदहृणें हृपुर्णपतिवृता ॥ मानतिहृणें ईचें नामधेतां ॥ पा
पचुरसहृसाहि ॥ ४७ ॥ सायेज्यतामुक्तीसमवत ॥ ईसशिरद्यावें जित्वरित ॥ यावरिजन
कजामात ॥ पुसेदशकंठशुषप्रति ॥ ४८ ॥ याचिप्रेथें बाणिलें शिर ॥ नुजकें विंककलासमा
चार ॥ यलहृणें येउनपतिचाकर ॥ पत्रलेहनिदिघटलें ॥ ४९ ॥ भुजपत्रदाविलें त्वरित ॥ अश्वि ॥ विजया ॥
यकरिकेईनास्तुत ॥ तोवांनरहृणलिसमस्त ॥ आह्रासस्यनबोटें ॥ ५० ॥ निर्जिवहृस्ते ॥ ११ ॥
लिहिलें पत्र ॥ तरिचबाणिमानुसाचार ॥ जरिहेहासविलें शिर ॥ आपुन्यापतिचें येकाकिं
॥ ५१ ॥ रामहृणें ईचामहिमाथोर ॥ काययेकनकरिनिर्धार ॥ तोसषमाहृलितं बाणविलें शिर ॥
अकंपुत्रेतें काकिं ॥ ५२ ॥ माहाविशाळमयंकर ॥ सनानकळकितमुखाबाहेर ॥ ५३ ॥

(10A)

सांकितासेसव्यनेत्र॥ सांकिंशेदुरचर्चिलस्ये॥ ५३॥ बाबरशोऽटिधत्तन॥ रषमैदीकिलेबाणुन॥ तें
 सुलोचनेनेदेखोन॥ हृदंउचलो नबालंगिते॥ ५४॥ फुंदफुंदोनिरडत॥ त्रिमुवनिबकियाईद्रजित॥
 त्याचेंशिरपडलेंयथ॥ कर्मविचित्रपुर्विचें॥ ५५॥ खालेपसरेनिउत्तरिवस्त्र॥ मगत्यावरिषविलेंशि
 र॥ सुतिनेकतनिनमस्कार॥ विनविकरजोडुनियां॥ ५६॥ अयोध्यानाथत्रिमुवनेश्वर॥ पाहुति
 स्वर्गचेसुरवर॥ तरिहांस्यकरासत्वर॥ जेपेवविनधन्यहणे॥ ५७॥ मंडशिनिनोदना
 नारिति॥ करितसातुहिप्राणपति॥ शिरबाडकाध्विति॥ कायहणोनधरियेला॥ ५८॥ आ
 जिअपराधसमस्त॥ समर्थचाकोवेपोदना॥ सासापतिहताधर्मबहुल॥ रघुपतिशिवावाको॥ ५९॥
 किंहीमीविध्वंसिलाहणेना॥ नेणेंक्रोधेधरिलेंमौन्य॥ किंसमरिंजयनबाळापुर्ण॥ ह्मणेनिदेखे
 वाटला॥ ६०॥ किंरघुविरदर्शनशिशिरजालें॥ सायोडपदप्रासजालें॥ ह्मणेनिबोलणेंरुवुं
 लें॥ समुक्तुटलेंजन्ममरण॥ ६१॥ इत्यादिभावेंत्यानवसरि॥ बेलिलिफणियाळकुमारि॥ किं

(11)

श्रीराम॥
॥१०॥

चितविनोदहिकरि॥ सुलोचनाहंसवावया॥ ६२॥ शूर्पनखातुमन्विता॥ जगत्स्थानिगौरविलि
 क्तुल॥ कृपानाशिकसुमित्रासुता॥ धेनुगलज्ज्वरंभि॥ ६३॥ मणिनिचंदरेवनिभूषण॥ अनंदला
 पित्रव्यकुंभकर्ण॥ तपोनाशिकबाणिकर्ण॥ सुयिवांसिसमपिले॥ ६४॥ नैसर्गैसाविनोदक
 रितो॥ परिशिरनहंसेतत्वता॥ मगतेयहृत्स्ववदनविदुहिता॥ खेदपरमकरितसे॥ ६५॥ लक्ष्मि
 पूर्वचक्रलेययार्थ॥ जरीपित्याससाह्याबाणि येयय॥ तरितुमचेशत्रुसमस्त॥ पराभविता ॥ विजय॥
 क्षणमात्रे॥ ६६॥ नैसर्गैकनाचिमात्र॥ मगदतेकुशिरहंससा॥ सव्यनेत्रउद्यडिनाज ॥ १०॥
 क्रस्मात्॥ जैविंविकासलक्रमकिणि॥ ६७॥ श्रीगमास्यपुसतिवांनर॥ कायगोष्टिसहंसले पीता
 शिर॥ याउपरिराजिवनेत्र॥ कायबोलताजाहला॥ ६८॥ क्षणेश्चसहृत्स्ववदन॥ तच्चिह्नज
 वतारलहृमया॥ त्याश्वशुरंमजमरिलेहृणोन॥ शिरहंसगदगदा॥ ६९॥ आज्ञानरपतेण॥
 मिथ्यासनादिधलेस्पृण॥ ज्ञानमयसव्यसव्यलोचन॥ उद्यडनिमजमिलेकिले॥ ७०॥ ६९॥

(1) A

वान्तरडोलवितिमान॥ सुलोचनदेविधन्यधन्य॥ सककसतियामाजिनिधान॥ शिरभचे
 तनहासविले॥ ७१॥ तवलेमाहाराजलक्ष्मण॥ व्यापिलामयामोहकतन॥ सुलोचनेनेकेडपाडो
 ना॥ आसुविनयनशरियेले॥ ७२॥ श्रीरघोतमबालत॥ अन्यायकेलाम्यायथार्थ॥ प्रत्यक्षमारन
 जामात॥ कन्यासुलोचनाश्रमविलि॥ ७३॥ कैयमिहाणविलक्ष्मण॥ पडलाजाणेनिरुचुनंहन॥
 ह्मणेक्षेत्रधर्मपुर्ण॥ वेदचपुर्विजमिताने॥ ७४॥ ह्मणधवापितापुत्रा॥ समरिमाणेनालि
 यासमोर॥ त्याशिवाधितोअणुमात्रा॥ दोषनसेहसाहि॥ ७५॥ सौमित्रह्मणेश्रीरामा॥ विश्वफ
 कंकितकलादमा॥ अजअजितपुर्णकामा॥ तुष्टिबालिलानेसत्यसर्व॥ ७६॥ सायावक्रमोहा
 दुर्गमा॥ प्रियाविगंवाटेबहुश्रमा॥ शितेरगितुष्टिबहोनपरमा॥ दृष्टपाषाणबालंगिले॥ ७७॥
 अशिबैकताविमात॥ सुपेनंद्रवलारधुनाथ॥ ह्मणमिउठविनईद्रजिता॥ करिनबैक्यउभयतांशि॥ ७८॥

या

॥ श्रीराम ॥
॥ १११ ॥

इंद्राह्मिनिअपिननमस्तु॥ आतांचउठेविनशेषजामात॥ बैकलांभाहाविरलेथा॥ गजबजिलेयेकाहो
चि॥ ७१॥ स्वुणदाविरधुनंदना॥ हेमनिनयरावेआपण॥ विमानिदेवसंपुर्ण॥ भयमितजाहालो
॥ ८०॥ अंगदादिकरफालवि॥ जांबुवंतनेत्रसंकेतदावि॥ विमिषणमानहालवि॥ नकाहोकरअधरि
सा॥ ८१॥ मगनिर्मिउपणवायुतनय॥ बेलिआजेंसर्वसप्रिय॥ हणोठेवाजितुमचेंबोदार्थ॥ यकि
केडेनेउनि॥ ८२॥ आज्ञाहणानिपाकिजे॥ अहोनापाकिजेउरु॥ विषवस्त्रिचेविमर्था॥ विजय॥
राप॥ दुग्धघालेनिवाठेविले॥ ८३॥ इंद्रजिताबाबेंदेवा॥ रावणेंबंदिघालेसर्व॥ याचिकाप ॥ १११ ॥
त्यवासव॥ तोहिनेयेसर्वथा॥ ८४॥ सौमित्रबालिलेवचन॥ तेसर्वाससमाधान॥ असेनकरावे
आपण॥ रधुनंदनअवस्यहणो॥ ८५॥ सुलाचनसहणमित्रसुत॥ पतिशिरघेउनजायवरिता॥
निराशादेस्वानबोलता॥ सतिसुलेचनतेसमई॥ ८६॥ हणोद्रिष्टिदेखिलारधुनाथ॥ ईतकेनजा
कंछत्यहत्या॥ हणोनिरामचरणोठेविला॥ मस्तकतेकासुलाचन॥ ८७॥ सव्यघालोनरधुविरा॥

(12A)

मारुतिधालिनमस्कार॥ ठभिराहिलिजोडुनिकर॥ कायउत्तरबोलिलि॥ ८६॥ ह्रणेअदिपुत्रषावकुं
 वनाथा॥ मछसपावेदोध्यास्का॥ कमठपाश्र्विपाकका॥ अदिवराहस्वरपत्तु॥ ८७॥ तोचितुंस्तंबा
 नेवनरहरि॥ वामनरपामधुकेवभरि॥ तिनससनेधरात्रि॥ केलिनिलेवितुवोवि॥ ८८॥ तोलुंजातो
 रंधुनाथा॥ कौशल्मात्रिजजनकजामात॥ मालपितावधुईत॥ सुंचमासाजगदंया॥ ८९॥ महनशत्रु
 हृदयभाराम॥ परत्रिंच्यासोईत्याश्रीराम॥ दिनबंधसर्वलमा॥ पुर्णब्रह्मजगद्गुरु॥ ९०॥ लंकेकेडेना
 जितलना॥ कृपिनद्याउकेसर्वथा॥ मजबगिनिवशावयजातो॥ विक्षेपकोषिनिक्किजे॥ ९१॥ अवस्थान
 णजगदोधार॥ सतिचेमायाठेविलाकर॥ सुलोचनागरंवार॥ करिनमस्कारराघवेद्रा॥ ९२॥ नेत्रद्वोरं
 व्याहाकुन॥ जयजयरामह्रणेन॥ हृदईररिवलारधुनदन॥ शिरधेउनचलिलि॥ ९३॥ मगरणा
 सयउनसत्वर॥ खेलतंपतिचंशरि॥ समुद्रतिरिंभयंकर॥ विशाककुंडरचियले॥ ९४॥ मंदोहरिस
 मवेललंकनाथा॥ सहपरिवोरपावलातेया॥ विमानिदेवसमस्त॥ पाहातिक्कैलुकसतिचं॥ ९५॥ सुलो

॥ श्रीराम ॥
॥ ११२ ॥

चनेने करन खान ॥ सौभाग्यकारक देत वाण ॥ कुंडिं पतिचित्तनु घालुन ॥ माहाबळचत विला ॥ ११८ ॥ कुं
 असप्रदृश्यण करि ॥ धर्मशिके वीशेष कुमरि ॥ ठडिटा कुनत अवसरि ॥ पोहजं वीरि न्याह कुनि ॥ ११९ ॥ ध
 उक्त दुंदुभिचिधनि ॥ सुरं विदरि जालि विमनि ॥ सुकुसुरांगना गगनि ॥ अक्षइवापे घडन उभ्या ॥ १२० ॥
 तें दिव्यशरिर पाहुनि ॥ ईंद्रजित देखिल विमनि ॥ जै मंदिर वतं चिनयनि ॥ प्राणजाला कासा विसा ॥ १२१ ॥
 शरिर टाकुन वीरित गलि ॥ आंतुन निघालि जात जेति ॥ दिव्य देह पावे निनि निश्चित ॥ पतिपाशिया वलि ॥ १२२ ॥ विजय ॥
 मग शरिर तुल्य जे ॥ अग्नि पुरि विपडलें जाडन ॥ तेव्हा मंदोदरी राजा पिरावणा ॥ शोक करित अत्यंत ॥ १२३ ॥
 सींधु संगमि करन खान ॥ सहपरि स्वारं पावला वषा ॥ मंदोदरी समवेत करि सदन ॥ लंके माजि प्रवेशला ॥ १२४ ॥
 धरो धरिं लोक वानित ॥ हणतिय शस्त्री जयो ध्या जय ॥ पक पलि वृत्त सत्य ॥ केलें सार्थक सुले चनेने ॥ १२५ ॥
 पस्सित सवर्ष पाडला ॥ अग्नि पुराणि सत्य वलिसुत ॥ बोलिला कथा इयथार्थ ॥ नाहि विपरित सवर्ष ॥ १२६ ॥
 कथार शिक्क बहु पाहि ॥ हणो नियो जिलिरा मविज ॥ ओत सदां धरोत हर्द ॥ ब्रह्मानंदें करोनिया ॥ १२७ ॥

(13A)

॥ आनंद ॥

पुढं कथागोडगहन ॥ अहिरावणमहिरावणनाख्यान ॥ पाताकाशिरामलक्ष्मण ॥ चोरनयानेतिल
॥ ८ ॥ लेख्येष्टावण्याद्यां वेतलुमंत ॥ लेख्याभायकोतसप्रेमभक्त ॥ ब्रह्मानंदनशुत ॥ हृदईतेणेठसा
वे ॥ ९ ॥ श्रीधरवरदाब्रह्मानंद ॥ पुराणपुराणादिसिद्धा ॥ निर्गुणजगदांकुरकंद ॥ जगदंबा
अमंग ॥ १० ॥ रामविजयग्रंथसुंदर ॥ समतवाग्निनाटकाधार ॥ स्वदांपरिसोतपीडितचतुर ॥
तिस्तावाभायगोडह ॥ ११ ॥ श्रीराम ॥ ॥ विजय ॥ ॥ राम ॥ ॥ श्रीगविंदार्यमहर्ष



Joint project of the Rajawade Sansodhan Mandal and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(15)

॥ श्रीराम ॥

॥ १३ ॥

॥ श्रीरामविजयग्रंथतिसावात्र प्रसमाप्ता ॥

॥ विजय ॥

॥ १३ ॥





मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com